कृषि किरण अंक-6, दिसंबर 2018: पृष्ठ:56-59
http://saaer.org.in

गुजरात की मुख्य दलहनी फसलों के कीट तथा उनका प्रबन्धन

बी.एल.जाखड़, सी.आर. काटवा, पुनम वि.टापरे एस. कुमार एवं पीयूस सरस
दलहन अनुसन्धान केन्द्र,
सरदार कृषि नगर दान्तीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, एस.के.नगर, गुजरात

गुजरात राज्य का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 188.1 लाख हेक्टेयर है इसमे से 114 लाख हेक्टेयर भूमि पर कृषि की जाती है। गुजरात के लगभग 9 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में दलहन की खेती की जाती है, जिसमे से 75 प्रतिशत क्षेत्रफल खरीफ दलहन तथा 25 प्रतिशत रबी दलहन के अन्तर्गत आता है। गुजरात मे दलहन का उत्पादन तीनो ऋतुओ (खरीफ, रबी तथा जायद) में किया जाता है। भारत दलहनी फसलो का विश्व मे सबसे बड़ा उत्पादक, आयातक एवं उपभोक्ता है। इन सबके बावजूद भी देश मे दलहन की प्रति व्यक्ति उपलब्धता काफी कम है। गुजरात राज्य भारत के कुल दलहनी क्षेत्रफल मे 30.49 प्रतिशत तथा उत्पादकता मे 27.11 प्रतिशत योगदान देता है। गुजरात राज्य की औसत दलहन उत्पादकता 916 किग्रा/है. है जबकि भारत की 735 किग्रा/है. है।

गुजरात में मुख्य रूप से दलहनी फसलों में अरहर, मूँग, उडद, चवला, मोठ, ग्वार तथा चने की खेती की जाती है। खरीफ ऋतु के अन्तर्गत मुख्य रूप से अरहर, मूँग, उडद, चवला, ग्वार तथा मोठ आते है। रबी में मुख्यरूप से चना व मटर की खेती की जाती है तथा जायद ऋतु मे जिन किसानो के पास पानी की समुचित व्यवस्था है वहां मूँग, चवला तथा ग्वार की खेती की जाती है। दलहन की खेती का वितरण सारे गुजरात मे समान रूप से नही है। अरहर की खेती मुख्यरूप से मध्य तथा दक्षिण गुजरात मे की जाती है जबकि मूँग, उडद और मोठ की खेती मुख्यतः उत्तर गुजरात में की जाती है। चने की खेती गुजरात के सभी क्षेत्रों में की जाती है। गुजरात राज्य के दलहन उत्पादन करने वाले जिले मुख्यरूप से बड़ोदा, पंचमहल, भरूच, दाहोद, नर्मदा, सुरत, बनासकांठा, साबरकांठा, कच्छ तथा पाटन है।

दलहनी फसलों के मुख्य कीट तथा उनका प्रबन्धन

1 फली छेदक (*Helicoverpa armigera*)

यह कीट सर्वाहारी है तथा मुख्यतः अरहर, चना, मूँग, उड़द एवं चवला मे हानि पहुँचाता है। इस कीट की सुडिया; (Larva) पत्तियो तथा फलियों मे छेद करके नुकसान पहुँचाती है।

कीट प्रबन्धन:

- ✓ फली छेदक कीट को नियंत्रित करने के लिए खेतो का समय-समय पर निरीक्षण करते रहना चाहिये।
- ✓ खेतो मे फेरोमोन ट्रेप 8-10/है. की दर से लगाने चाहिये।
- ✓ रात को खेतो मे प्रकाश प्रपन्ज (Light trap) लगाकर व्यस्क कीटो को आसानी से नष्ट किया जा सकता है।
- ✓ कीट भक्षी पक्षियो के बैठने के लिए T आकार की खुटियां (डंडे) 50/है. की दर से खेतो मे लगानी चाहिये।
- ✓ व्यस्क पंतगे आने या एक सुंडी प्रति पोधे मिलने पर कीटनाशक दवाओ जैसे इन्डोकसाकार्ब 15.8 EC 4.5 मिली./10 ली. अथवा ईमोमेक्टीन SC 2.75 ग्रा./10 ली. अथवा स्पाईनोसेड 45 SC 2 मिली./10 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिये। यदि आवष्कता हो तो दुसरा छिड़काव 15 दिन के अन्तराल में करना चाहिये।
- ✓ सायकांल के समय खेतो में एचएनपीवी (*HaNPV*) 250 एल.ई/है. तथा बीटी; (Bt) 1-1.5 किग्रा/है. के हिसाब से छिड़काव करना चाहिये।

2 चित्तीदार फली छेदक (*Maruca vitrata*):

यह कीट मुख्यतः अरहर, चवला और मूँग मे नुकसान पहुँचाता है। इस कीट की सुडिया (Larva) फूल अवस्था के समय फूलो को नुकसान पहुँचाती है जिससे फूल गिर जाते है। यह कीट फलिया बनते समय फलियो मे छेद करके दाने खा जाते है।

कीट प्रबन्धन:

इस कीट के नियंन्त्रण के लिए 50 प्रतिशत फूल अवस्था के समय कीटनाशक का प्रयोग करना चाहिये जैसे इन्डोकसाकार्ब 15.8 EC 3.5 मिली/10 ली. अथवा स्पाईनोसेड 45 SC 1.6 मिली/10 ली. अथवा राईनोक्सीपायर 18.5 SC 1.5 मिली/10 ली. पानी मे मिलाकर छिड़काव करना चाहिये। यदि आवष्कता हो तो दूसरा छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करना चाहिये।

3 फली मख्खी (Pod fly):

यह कीट सामान्यत घरेलु मख्खी जैसी ही होती है। यह कीट मुख्य रूप से अरहर की फसल मे फलियो को नुकसान पहुँचाती है।

फली मख्खी मुख्यतः फलियो के अन्दर अंडे देती है तथा सुण्डी दानो केा नुकसान पहुॅचाती है जिससे दाने अपरिपक्व अवस्था मे ही रह जाते है फलस्वरूप उपज मे भारी कमी होती है।

कीट प्रबन्धन:

फली मख्खी के नियन्त्रण लिए नीम के तेल 20 मिली/10 ली पानी मे मिलाकर फूल अवस्था तथा फलियो के बनते समय छिड़काव करना चाहिये। यदि कीट का प्रकोप अधिक मात्रा मे हो तो कीटनाशक दवा फ्लूर्बेन्डामाईड 3 मिली/10 ली पानी मे मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।

4 सफेंद मक्खी (White fly):

यह कीट मुख्यरूप से सभी दलहनी फसलो केा नुकसान पहुॅचाती है। इस कीट के अर्भक व व्यस्क पत्तियो की निचली सतह से रस चुसते है। यह कीट मुख्यरूप से विषाणु का स्थानान्तरण बीमार पौधो से रस चुस कर स्वस्थ पौधो मे करता है।

कीट प्रबन्धन:

- ✓ सफेंद मख्खी के नियन्त्रण के लिए खेतो मे जगह-जगह पर पीला चिपचिता ट्रेप; (Yellow sticky trap) 8-10/है. लगाना चाहिये।
- ✓ कीटभक्षी का प्रयोग जैसे लेडी बर्ड बिट्ल्स अथवा क्राइसोपरला, 5000 व्यस्क/है. का उपयोग करना चाहिये।
- ✓ सफेद मख्खी के नियन्त्रण के लिए ईमीडाक्लोप्रीड 17.8 SC 5 मिली/10 ली. अथवा थायोमीथोकजाम 25 WG 3 ग्रा./10 ली. पानी मे मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।

5 थिप्रस (Thrips):

यह कीट मुख्यतः चवला, मूँग एवं उड़द की फसल मे नुकासान पहुॅचाता है। यह कीट बहुत छोटे एंव पतले आकार के होते है जो पत्तियो पर पाये जाते है। कीट अपने अण्डे उत्तको के भीतर देता है। शिशु तथा व्यस्क दोनो पत्तियो के उत्तको में प्रवेष करके उनका रस चुसते है। पत्तिया ऊपर से मुड जाती है। जिन पौधो पर इस कीट का आक्रमण होता है उसकी बढवार रूक जाती है पत्तिया गिर जाती है एवं ताजी कलिकाए भगुर हो जाती है।

कीट नियन्त्रण:

बीज को बुवाई से पूर्व ईमीडाक्लोप्रीड 70 SL 5 ग्राम/कि ग्रा बीजद उपचारित करके बुवाई करनी चाहिये।इस कीट के नियन्त्रण के लिए डाइमीथोएट 30 EC 10 मिली/10 ली अथवा मोनोक्रोटोफास 36 SL 10 मिली/10 ली. पानी मे मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।

6 जेसीड (Jassid):

यह कीट मुख्यरूप से अरहर, मूँग, उड़द, चवला, ग्वार एवं मोठ मे नुकसान करता है। यह कीट पौधो की पत्तियो एवं अन्य कोमल भागो से रस चुसते है फलस्वरूप

पत्ते झुलसे हुए दिखाई पड़ते है जिससे उत्पादन पर विपरित प्रभाव पड़ता है।

इस कीट के नियंत्रण के लिए कीटनाशक दवाओ का छिड़काव करना चाहिए जैसे थायोमीथोकजाम 25 WG 3 ग्रा/10 ली. अथवा ऐसीटामीप्रीड 20 SP 3 ग्रा/10 ली. अथवा मोनोक्रोटोफास 36 SL 10 मिली/10 ली. पानी मे मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।

7 पर्ण खनक (Leaf miner):

यह कीट मुख्यतः चवला, मूँग, एवं उडद की फसल कों नुकासान करता है। इस कीट से मुख्यरूप से हानि सुन्ड्री द्वारा पत्तियो से भोजन ग्रहण करने के लिये बनाई गई सुरगों से होती है। सुंरग बनाने से पत्तियो की भोजन बनाने की क्षमता कम हो जाती है और अधिक प्रकोप होने से पत्तिया मुरझा कर सूख जाती है।

कीट नियन्त्रण:

- ✓ फसल की बुवाई अगेती करनी चाहिये क्योकि पछेती फसल मे इसका प्रकोप अधिक होता है।
- ✓ कीट का प्रकोप अधिक होने पर मोनोक्रोटोफास 36 SL 10 मिली/10 ली. अथवा मिथाईल डिमेटोन 25 EC 10 मिली/10 ली पानी मे मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।